Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 6
उषा - शमशेर बहादुर सिंह

कवि परिचय

शमशेर बहादुर सिंह का जन्म देहरादून में सन 1911 ई. में हुआ। शमशेर बहादुर सिंह को मात्र 8-9 वर्ष की उम्र में माँ का चिरवियोग सहना पड़ा। 18 वर्ष की उम्र में उनका विवाह हुआ मगर मात्र 6 वर्ष साथ निभाकर पत्नी भी टीबी से चल बसी। जीवन के अभावों ने उनके कवित्व को दुर्बल नहीं बनाया बल्कि धारदार बनाया। बिम्बधर्मी कवि के रूप में विख्यात शमशेर की कविता में प्रगतिशील कवि की वैचारिकता तथा प्रयोगधर्मी कवि की शिल्प विधा का अनूठा संगम मिलता है कवि द्वारा रचित सौन्दर्य के अनूठे चित्र पाठकों के मन को भाते हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने, बात बोलेगी तथा काल तुझसे होड़ है मेरी। उन्होंने उर्दू-हिन्दी कोश का सम्पादन भी किया। सन 1993 में उनकी मृत्यु हो गयी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.'उषा' कविता में है -

(अ) सूर्योदय का वर्णन

(ब) सूर्यास्त का वर्णन

(स) बादलों का शब्द-चित्र

(द) सबेरे की लालिमा का वर्णन

उत्तर: (द)

प्रश्न 2.'जादू टूटता है उषा का' में जादू का अर्थ है -

(अ) तमाशा

(ब) खेल

(स) आकर्षण

(द) भोर का दृश्य

उत्तर: (स)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.भोर का आकाश किसके समान नीला था?

उत्तर: भोर का आकाश बहुत नीले शंख के समान था।

प्रश्न 2. कवि ने नभ को राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा है?

उत्तर: नीले आकाश में भोर के हल्के सफेद प्रकाश के मिल जाने पर राख जैसा रंग दिखाई देने के कारण, कवि ने उसे राख से लीपा चौका बताया है।

प्रश्न 3. उषा का जादू टूटने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: जादू टूटने का तात्पर्य है कि सूर्योदय होते ही आकाश में दिखाई देने वाला उषा का मनमोहक दृश्य समाप्त हो गया है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.'लाल केसर' तथा 'लाल खड़िया चाक' के माध्यम से कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर: कवि प्रातःकाल की लालिमा के लिए ***लाल केसर*** और ***लाल खड़िया चाक*** जैसे नवीन विमानों का प्रयोग करता है। इन नवीन उपमानों के माध्यम से कवि उषाकाल के अप्रतिम सौंदर्य का हृदयहारी चित्रण करता है। लाल केसर और लाल खड़िया चौक हमारे सामान्य परिवेश से लिए गए उपमान है। इस तरह से कवि इन दोनों उपमानों के माध्यम से उषा को हमारे सहज जीवन से जोड़ने का प्रयास करता है।

प्रश्न 2. 'उषा' कविता में कवि का क्या संदेश है?

उत्तर: कवि शमशेर हिन्दी कविता के प्रयोगवादी कवियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। 'उषा' कविता में प्रकृति-चित्रण में कवि ने कुछ नए प्रयोग दिए हैं। इस कविता में निहित संदेश यही है कि कवि परंपरा से हटकर, नवीन उपमानों के प्रयोग से, पाठकों की प्रकृति के प्रति रुचि बढ़ाना चाहता है। कवि ने पाठकों के साथ ही कवियों को भी चुनौतीमय संदेश दिया है कि वे परंपरा से हटकर प्रकृति के प्रति लोगों का अनुराग जगाएँ।।

प्रश्न 3. उषा' कविता की प्रमुख शिल्पगत विशेषता क्या है?

उत्तर: 'शमशेर' एक प्रयोगवादी कवि हैं। उन्हें दिन बका कभी भी कहा जाता है।कविता 'उषा' में भी कवि ने 'भोर' के प्रतिपल बदलते दृश्यों को शब्दों में बाँधने के लिए नए-नए उपमानों का प्रयोग किया है। कवि ने बिंबों के माध्यम से प्रकृति की गति को शब्दों में बांधने का अनोखा प्रयास किया है । प्रात:कालीन आकाश को ' ***नीला शंख', 'राख से लीपा हुआ गीला चौका', 'काली सिल पर लाल केसर', 'लाल खड़िया चाक से मली स्लेट'*** तथा ***'नीले जल में झिलमिलाते गौर वर्ण शरीर'*** जैसे नए

उपमानों से प्रस्तुत किया है। ***राख से लीपा हुआ चौका, बहुत काली सिल, स्लेट या लाल खड़िया चाक;*** ये हमारे सामान्यघरेलू परिवार के बिम्ब हैं, लेकिन इनमें अनूठा सौन्दर्य भी है।उपमा, रूपक , उत्प्रेक्षा अलंकारों का सुंदर चित्रण किया गया है , अत: 'उषा' कविता की प्रमुख शिल्पगत विशेषता, उसमें नवीन बिम्ब-योजना है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. शमशेर बहादुर सिंह की 'उषा' का प्रकृति वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: उषा कविता में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रातः काल का अत्यंत हृदयहारी शब्द चित्र खींचा है। भोर से कुछ ही समय पहले आकाश नीले शंख के समान प्रतीत होता है। वह ऐसा लगता है जैसे राख से लीपा हुआ चौका हो और उसके बाद जैसे-जैसे भोर होने लगती है वैसे वैसे ही आकाश में लालिमा छाने लगती है। आकाश का रंग कुछ अधिक कालापन लिए दिखाई देता है तब ऐसा लगता है जैसे कि वह एक विशाल पत्थर हो और उसे किसी ने लाल केसर से धो दिया हो। विशाल आकाश विशाल स्लेट के समान प्रतीत होता है तब ऐसा लगता है कि जैसे किसी ने उस पर लाल खड़िया चाक मल दी हो। कवि कहता है कि जब प्रभात काल होता है तो सूर्य की किरणें चारों तरफ फैलने लगती है। ऐसा लगता है जैसे नायिका की सुंदर देह पानी के अंदर झिलमिला रही हो। धीरे-धीरे सूर्योदय होता है और प्रकृति का यह सुंदर जादू समाप्त हो जाता है।

सप्रसंग व्याख्याएँ

1.

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)

शब्दार्थ- ***भोर -*** प्रभात। ***नभ -*** आकाश। ***चौका -*** रसोई बनाने का स्थान।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'सृजन,** में संकलित **'उषा'** कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि **शमशेर बहादुर सिंह** हैं। कविता में कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है। इस अंश में सूर्योदय का मनोहारी वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कवि शमशेर बहादुर सिंह प्रातः कालीन नभ का मनोरम चित्रण करते हुए कहते हैं कि प्रातः काल भोर से कुछ समय पहले आकाश नीले रंग का शंख के समान दिखाई देता है। भोर के समय आकाश हल का कालापन लिए हुए होता है इसलिए वह राख के जैसा प्रतीत होता है अतः कवि

लिखता है कि भोर का नभ राख से लीपे हुए चौके के समान दिखाई दे रहा है, और जैसे उस चौके को अभी-अभी लीपा गया है इसलिए वह गीला है।

विशेष-

(i) कवि ने प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है।

(ii) '***शंख जैसे***' में उपमा अलंकार है।

(iii) सहज व सरल शब्दों का प्रयोग किया है।

(iv) ग्रामीण परिवेश सजीव हो उठता है।

(*v*) नए उपमानों का प्रयोग है।

2.

बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

शब्दार्थ- ***सिल***–मसाला पीसने के लिए बनाया गया पत्थर। ***केसर-*** विशेष फूल। ***मल देना-*** लगा देना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'सृजन,** में संकलित **'उषा'** कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि **शमशेर बहादुर सिंह** हैं। इस कविता में कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है। कविता के इस अंश में सूर्योदय का मनोहारी चित्रण किया गया है।

व्याख्या- कवि शमशेर बहादुर सिंह प्रातः कालीन प्रकृति का शब्द चित्र खींचते हुए कहते हैं कि जब भोर होने लगती है तो आकाश में लालिमा छाने लगती है। आकाश एक विशाल काली शिला अर्थात पत्थर के समान प्रतीत होता है और ऐसा लगता है जैसे उस आकाश रूपी विशाल शिला को किसी ने लाल केसर से धो दिया हो या आकाश रूपी विशाल स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया चोक मल दी हो। अर्थात भोर होने पर हल्का अंधेरा होता है। उस समय आकाश कुछ काले रंग का दिखाई देता है और पूर्व दिशा में लाली फैलने लगती है तो वह केसर का आभास करवाती है। इस प्रकार कवि ने प्रातःकाल का बड़ा ही मनोरम और हृदयहारी चित्रण किया है।

विशेष-

(i) कवि ने प्रकृति का मनोहारी वर्णन किया है।

(ii) पूरे काव्यांश में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(iii) मुक्तक छंद का प्रयोग है।

(iv) नए बिंबों व उपमानों का प्रयोग है।

(*v*) सरल, सहज खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति है।

3.

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और .....
जादू टूटता हैं इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा हैं।

शब्दार्थ- ***गौर-***गोरी। ***झिलमिल-*** मचलती हुई।***देह***– शरीर। ***जादू-*** आकर्षण, सौंदर्य। ***उषा-*** प्रात:काल। ***सूर्योदय-*** सूर्य का उदय होना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'सृजन,** में संकलित **'उषा'** कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि **शमशेर बहादुर सिंह** हैं। कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है। इसमें सूर्योदय का मनोहारी चित्रण किया गया है।

व्याख्या- कवि ने भोर के पल-पल। बदलते दृश्य का सुंदर वर्णन किया है। कविकहता है कि जब प्रातः काल होता है अर्थात जब सूर्योदय होने लगता है तो सूर्य की स्वर्णिम आभा वाली प्रथम किरण जल में स्पर्श करती है तो ऐसा आभास होता है जैसे सुंदर नायिका का गोरा सुंदर देह पानी में झिलमिला रहा हो। यह ऐसा समय होता है जब उषा काल समाप्त हो रहा होता है। प्रकृति का जादू धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है, और सूर्योदय होने लगता है।

विशेष-

(i) कवि ने उषा का सुंदर दृश्य बिंब प्रस्तुत किया है।

(ii) माधुर्य गुण है।

(iii) 'नील जल ' हिल रही हो।'-में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(iv) सरल भाषा का प्रयोग है।

(v) मुक्तक छंद है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg